947 P
949
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1304
10/21

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 949

❀ वन्देमातरम् ❀

झंकार

I... RECORD
RECEIVED.
10 DEC. 1930
949
DEPARTMENT

हुक्म हाकिम का है फ़रियादे ज़वानी रुक जाय।
दिल की बहती हुई गङ्गा की रवानी रुक जाय॥
क़ौम कहती है हवा बन्द हो पानी रुक जाय।
पर अब यह मुमकिन नहीं जोशे ज़वानी रुक जाय॥

हों ख़बरदार जिन्होंने यह अज़ीअत दी है।
कुछ तमाशा यह नहीं क़ौम ने करवट ली है॥

'चकवस्त'

रचयिता व संकलन कर्ता—

चन्द्रदत्त आर्य 'चन्द्र'

प्रथम वार २०००] १९३० [मूल्य आध आना

891.431
Az 97 J

प्रिय पाठकों,

यह तुच्छ भेंट आपकी सेवा में सादर समर्पित है, आशा है अपना कर मुझे कृतार्थ करेंगे। मैं साथ ही साथ अपने मित्र रामनरायण चतुर्वेदी विशारद को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने मुझे इस पुस्तक के लिखने में पूर्ण सहायता देकर अनुगृहीत किया है।

आपका सेवक
लेखक

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No ....
Date ....
GOVT. OF INDIA

१—ईश वन्दना
२—राष्ट्रीय गान
३—भारत माता
४—ध्येय
५—आज़ादी
६—जयमाल
७—विदा
८—वतन की उल्फत
९—आजा आजा रोक हमें
१०—नौजवानों के नाम
११—गांधी जी की आज्ञा
१२—वतन का राग
१३—गायेंगे
१४—जुल्म
१५—स्वतन्त्र भारत
१६—वीर-प्रतिज्ञा

ईश्वर-वन्दना

प्रभो आपके चरणों में हम शीश झुकाते ।
मातृभूमि की बलिवेदी पर बलि बलि जाते ॥
दो हमको बल नाथ युवक हम सब मिल-जुल कर ।
करलें संचय शक्ति वीर निर्भय हम बन कर ॥
रण से न मुड़ें हम कभी शत्रु से हार न मानें ।
गोली बम्ब मशीन दमन का भय नहिं जाने ॥
कंपायमान हों कभी न विपुल बाधा विपदा से ॥
विनय हमारी आज यही वरदा वरदा से ॥

राष्ट्रीय गान

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ।।

सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला ।
वीरों को हर्षाने वाला, मातृभूमि का तन मन सारा ।।

झंडा ऊंचा रहे हमारा ।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ॥

स्वतंत्रता के भीषण रन में, लखि कर जोश बढ़े छन-छन में ।
कांपे शत्रु देख कर मन में, मिट जावे भय संकट सारा ।।

झंडा ऊंचा रहे हमारा ।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ।।

इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय ।
बोलो भारत-माता की ज़य, स्वतंत्रता है ध्येय हमारा ।।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ।।

आओ प्यारे वीरो आओ, देश धर्म पर बलि बलि जाओ ।
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा ।।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ॥

इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये ।
विश्व विजय करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ।।
झंडा ऊंचा रहे हमारा ।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ।।

दिल फ़िदा करते हैं, क़ुर्बान जिगर करते हैं।
पास जो कुछ है वह माता की नज़र करते हैं॥

भारत माता

वन्दे प्यारी भारत माता॥
तुझ से बना रहे नित नाता॥
सुजल सुफल शीतल सुखकारी, शस्य-श्यामला-सुरभित-सारी।
जगति जननि जगदीश दुलारी, जाते सुरनर मुनि बलि हारी॥

अखिल विश्व तेरा गुण गाता।
वन्दे प्यारी भारत माता॥
कमला कमल विहरिणी तू है, विद्या बुद्धि वितरिणी तू है।
भूषित धरणी भरिणी तू है, दुर्गा दस कर धरिणी तू है॥

प्रलयङ्करी शंकरी त्राता।
वन्दे प्यारी भारत माता॥
तेरे सुत रण में मतवाले, अपने सर से कफ़न संभाले।
पड़ जायें प्राणों के लाले, किन्तु नहीं वे डिगने वाले॥

कौन तुझे अबला बतलाता।
बन्दे प्यारी भारत माता॥
तिलक यतीन्द्र लाजपति प्यारे, मां तेरी आंखों के तारे।
अपना सुख रख एक किनारे, बढ़े जहां जलते अङ्गारे॥

खून शहीदों का रंग लाता।
वन्दे प्यारी भारत माता॥
मां वर दे बल से भर जायें, दुश्मन देख कर नहिं डर जायें।
हंसते हुये चलें मर जायें, बन्धन मुक्त तुझे कर जायें॥

दिखलाये दुश्मन दहलाता।
वन्दे प्यारी भारत माता॥

नौजवानो यही मौक़ा है उठो खुल खेलो।
ख़िदमते क़ौम में बला आये खुशी से झेलो॥
देश के सिदूक़ में माता को जवानी दे लो।
फिर मिलेंगी न ये माता की दुआयें ले लो।
देखें कौन आता है इरशाद बजा लाने को॥

ध्येय

उतरे हैं इस समर भूमि में बल पौरुष दिखलाने को।
युद्ध कुशलता प्रगटाने को, अरि का मान लचाने को॥

तोड़ेंगे हम आगे बढ़ कर, अपनी गुलामी की कड़ियां।
परवाह नहीं गर दिखलाई दें, शूली पर सर की लड़ियां॥

लाठी के हम वार सहेंगे, गोली को छाती पर लेंगे।
मृत्यु से अब खेल करेंगे, जीवन तन मन वार करेंगे॥

भारतवर्ष हमारा प्यारा, इससे नाता सदा हमारा।
शत्रू का कर देंइ किनारा, केवल यह ही ध्येय हमारा॥

मर के भी रूह मेरी दिल की तरह शाद रहे।
मैं रहूँ या न रहूँ यह वतन आज़ाद रहे॥

आज़ादी

ज़ालिम तेरी तलवार का क्या ख़ौफ़ है हमें।
अरमान है कि क़त्ल कर सैयाद अब हमें॥
भारत के लिये त्याग देंगे घर की देहरियां।
लटकी दिखाई देंगी ये शूली पै अस्थियां॥
मर जायेंगे मिट जायेंगे कुछ करके हटेंगे।
अपने वतन को दोस्तो आज़ाद करेंगे॥
तोपें मशीन बम्ब की परवाह क्या हमें।
ज़ालिम तेरी तलवार का क्या ख़ौफ़ है हमें॥

काटेंगे सारी बेड़ियां अब अपने वतन की।
है जोश ख़ून खा रहा रग रग में बदन की॥
बढ़ आओ नौजवानो ज़ोर शोर लगा दें।
दुश्मन की हस्ती मेंट कर भारत से भगा दें॥
रोकेंगी ना अज़ीज़ों की ज़िदें भी अब हमें।
ज़ालिम तेरी तलवार का क्या ख़ौफ़ है हमें॥

है ज़िन्दगी में दोस्तो आज़ादी का मज़ा।
बेग़ैरती की ज़िन्दगी से अच्छी है कज़ा॥
सर से कफ़न को बांध के निकले हैं आज हम,
जा छेड़ बैठे हैं, रक़ीब ख़ार, खाये हम॥
चस्का लगा है वस्लए आज़ादी का हमें।
ज़ालिम तेरी तलवार का क्या ख़ौफ़ है हमें॥

———

क्या ही लज्जत है कि रग रग से सदा आती रहे
दम न ले तलवार जब तक जान बिस्मिल में रहे

जयमाला

अगर तुमको जकड़े जंजीर, न मानो उसकी भारी पीर।
कहीं जो बीधें तुमको तीर, खड़े रहना बन कर सब धीर॥
अगर भाले दें छाती चीर, वहां पर होना नहीं अधीर।
न होना कभी दुखी यह जान, कि जाती है लाखों की जान॥
बढ़ो नायिक की आज्ञा मान, तजो अब प्राणों का सब ध्यान।
पड़े गोली पर गोली आन, खड़े हों सभी छातियां तान॥
तुम्हारे सिर पर हो तलवार, गोलियां छाती से हों पार।
कटे गर्दन बोलो जयकार, बढ़ो आगे फिर से ललकार॥
दिखा दो जौहर फिर इकबार, न करना कभी किसी पर वार।
खड़ा सिर के ऊपर हो काल, चलो फिर भी मर्दानी चाल॥
जहां गोले बरसें विकराल, तोप के मुंह में दो सिर डाल।
भरेगी लोथों से जब खाल, गले में होगी तब जयमाल॥

"माली"

हो चुकी क़ौम के मातम बहुत सीना जनी।
अब हो इस रँग का सन्यास यह है दिल में ठनी॥
मादरे हिन्द की तस्वीर हो सीने पै बनी।
बेड़ियां पांव में हों और गले में कफ़नी॥

विदा

रण-भेरी बज उठी विदा दे समर भूमि में जान दे।
मां निज चरणों पर हमको यह जीवन हार चढ़ाने दे॥

हँस हँस रण में शीश कटावें
बंधन मुक्त तुझे कर जावें
भारतवासी सब मिल गावें
बार बार ले जन्म तुझी से, तुझ ही में मिल जाने दे ॥रण०॥
वत्स प्राण की ममता त्यागो
बलिदानों से दूर न भागो
सत्य प्रेम में हमको पागो
एक बार फिर जन्म भूमि में जीवित जोश जगानें दे।
रण-भेरी बज उठी बिदा दे समर भूमि में जाने दे॥
मां यह क्यों आंसू टपकाना
दे आशीष हमें अब जाना
पहना दे केसरिया बाना
बिदा बिदा मां निर्भय होकर अरि का मान मिटाने दे।
रण-भेरी बज उठी बिदा दे समर भूमि में जाने दे॥

अब तो हम डाल चुके अपने गले में झोली।
एक रहती है फ़कीरों की हमेशा बोली॥

वतन की उल्फत

ख़ौफ़ आफ़त से नहीं दिल में रवां आयेगी।
बात सची है सदा लब पे वही आयेगी॥
मुझ से निकलेगी न मर कर भी वतन की उल्फत।
मेरी मिट्टी से भी खुशबू ये वफ़ा आयेगी॥
आत्मा हूँ मैं बदल डालूंगा चोला फौरन।
क्या करेगी मेरा गर मेरी क़ज़ा आयेगी॥

अख्तर अश्क बहायेगा मेरे लाशे ऊपर ।
ग़म मनाने के लिये काली घटा आयेगी ॥
खून रोयेगी शफ़क़ भी मेरे मर जाने पर ।
ख़ाक उड़ाने के लिए बादे सवा आयेगी ॥
जिन्दगानी में तो मिलने से झिझकती है 'फलक़' ।
खल्क़ को याद मेरी बादे फ़ना आयेगी ॥

'फलक़'

हाय जल्लादी वो देखो कह रहा सैयाद यह ।
वक्त जिबहा बुलबुलों का फड़फड़ाना है मना ॥

आजा आजा रोक हमें

नमक बनाते नमक बेचते आजा आजा रोक हमें ।
दमन चक्र तू आज चला कर पहुंचा आजा क्लेश हमें ॥
सत्य धैर्य का कवच पहिन कर उतरे इस भीषण रण में ।
होंगे सारे वार विफल ले सोच समझ अपने मन में ॥
परवाह किसे है गर देगा भर पशुवत हमको जेलों में ।
स्वर्ग सदृश पावेंगे सुख हम कृष्णदायिनी जेलों में ॥
करले करले अन्याय अभी तू चाहे जितना जी भर के ।
समय आ रहा जब तू जाये अपना मुख काला करके ॥
घड़ा भर गया पापों से अब तेरी नैया डूबेगी ।
पराधीन भारत माता की कड़ियां जल्दी टूटेंगी ॥

नौजवानों के नाम

वाह तो तब है जब इस बात की जिद्द ठानें ।
देश के वास्ते क़ुर्बान करें सब जानें ॥

लाख समझाये कोई एक न उसकी मानें।
कहता है ख़ून से मन अपना गरेवां सानें ॥
ना सहा आग लगे तेरे ये समझाने को।

उठो नौजवानो सुनो औ सुना दो।
शहीदों का संदेश भू को हिला दो ॥

खुदा ने आज़ाद हमको बनाया, परिन्दों से इसका सबक है सिखाया
नामर्द हैं दूध माँ का लजाया, गुलामी में जिसने स्वजीवन बिताया

अब भी संभलो बात बिगड़ा बन दो।
कि प्यारे वतन को ऊंचा दिखा दो ॥

घरबार छोड़ो वस्त्र पीले पहिन कर,
डट जाओ जाँ को हथेली में रख कर।
मारो ना मर जाओ हुँकार देकर,
पर रण से न हरगिज हटै पैर मुड़कर ॥
अपना ही तन, मन, धन सब मिटा दो।
शहीदों का संदेश भू को हिला दो ॥
दुश्मन की हस्ती को जड़ से मिटाओ,
भारत में रहने न पावे भगाओ ॥
आज़ाद अपने वतन को दिखाओ,
असली मज़ा जिन्दगी का उठाओ ॥

गुलामी का नामोनिशां तक मिटा दो।
कि प्यारे वतन को ऊंचा दिखा दो ॥

वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है।
सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तहां होगा ॥

गांधी जी की आज्ञा

है गयो हुकम आज गांधी कौ सुन लेउ भैया कान लगाय।
अन्तिम है संग्राम हमारो, पैर न पीछे कोई डारो ॥
अन्यायी परदेशिन टारो, भूल चूक नहिं होय नहीं तो रहो।
पड़े पछिताय ॥ है गयो ॥

मात पिता अरु भैया बहिनी, हाथ बटावें मानो कहनी।
आज़ादी हित छोड़े करनी, सभी भारती मिल जुल करके ॥
ज़ोर लगावें आइ ॥ है गयो ॥

स्कूल मदर्सा तोड़ें पढ़ैया, देंय वकालत छोड़ लिखैया।
नमक बनावें डाल मढ़ैया, तोड़ फोड़ कानून कचहरी ॥
लेउ सुराज छिनाय ॥ है गयो ॥

हाट विदेशिन धरना डारो, नौकरशाही को मुँह कर देउ कारो।
वस्त्र स्वदेशी सब ही धारो, गांव गांव और घर घर भैया ॥
चर्खा देउ चलाय। है गयो।

भारतवर्ष हमारी प्यारो, है किस के दादा की इजारो।
नौकरशाही को कर देउ किनारो, कहै शान्तिअस्त्र से 'चन्द्र' अब।
जो नाक चना बिनजाय ॥ है गयो ॥

वतन का राग

पिन्हाने वाले अगर बेड़ियां पिन्हायेंगे।
खुशी से क़ैद के गोशे को हम बसायगे॥
जो संतरी दरे जिन्दा के सो भी जायेंगे।
यह राग गा के उन्हें नींद से जगायेंगे॥

तलब फ़जूल है कांटे के फूल के बदले।
न लें बहिश्त भीं हम होमरूल के बदले॥

यह जोश पाक जमाना मिटा नहीं सकता।
रगों में खूँ की हसरत मिटा नहीं सकता॥
यह आग है जिसे पानी बुझा नहीं सकता।
दिलों में आके यह अरमान जा नहीं सकता॥

तलब फ़जूल है कांटे केफूल के बदले।
न लें बहिश्त भी हम हो मरूल के बदले॥

'गायेंगे'

आज से शौक़े वफ़ा का यह जौहर होगा।
फ़र्श कांटों का हमें फूल का विस्तर होगा॥
फूल हो जायगा छाती पै जो पत्थर होगा।
क़ैद ख़ाना जिसे कहते हैं वही घर होगा॥

संतरी देख के इस जोश को शरमायेंगे।
गीत ज़ञ्जीर की झंकार में हम गायेंगे॥

'जुल्म'

गरीब चैन नहीं भूख प्यास के मारे ।
हैं किस अज़ाब में हिन्दोस्तान के प्यारे ॥
तुम्हें तो ऐश के सामान जमां हैं सारे ।
वहां वदन से रवां हैं लहू के फ़व्वारे ॥

जो चुप रहें तो हवा कौम की बिगड़ती है ।
जो सर उठायें तो कोड़ों की मार पड़ती है ॥

तमाम उम्र कटी एक ही क़रीने पर ।
गिराया अपना लहू वतन के पसीने पर ॥

स्वतन्त्र भारत

अहाहा मोहन के मुंह से निकला स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ।
सचेत होकर सुना सभी ने स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ॥
बना के कुटिया स्वतन्त्रता की सपूत जेलों में रम रहे हैं ।
निकल के देखेंगे वे तपस्वी स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ॥
कुमारी हिमगिरि अटक कटक लों बजेगा डंका स्वतन्त्रता का ।
कहेंगे तैंतीस करोड़ मिल कर स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र भारत ॥

वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ।
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है ॥

वीर-प्रतिज्ञा

देश से निकाल देंगे कुटिल कुचालियों को,
भारत की आन शान जग में फैलायेंगे

करेंगे प्रचार घोर विश्व में समानता का,
पूँजीवाद सत्ता भी समाज से मिटायेंगे ॥

छोड़ेंगे न 'चन्द्र' अत्याचारी अनाचारी एक,
भेद भाव छोड़ कर अछूत अपनायेंगे।

धारेंगे अनौखा बाना वीरता का भारतीय,
प्राण मिट जाय पर प्रण को निभायेंगे ॥

दाग्रसिंह वर्मा के प्रबन्ध से
आदर्श प्रेस, कसेरट बाजार आगरा में मुद्रक